ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E2

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Ravi Gangwar **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** FP/JULY19/4S1

Center & Date: Mukherjee Nagar, 13/8/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 0801337

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B प्रत्येक में से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।

   Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.

2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।

   Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.

3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

   Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.

4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।

   Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

   To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.

2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।

   The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.

3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।

   The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.

4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।

   Morality is its own reward.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. तन के भूगोल से परे एक स्त्री के मन की गाँठें खोलकर कभी पढ़ा है तुमने।

Have you ever looked beyond a woman's body to understand the complexities of her mind.

2. अंतरिक्ष पर शोध : निरर्थक प्रयास या अवसरों का पुंज।

Space research : Futile efforts or a beam of opportunities.

3. प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण-पत्र है।

Ignorance towards nature is an invitation to catastrophe.

4. समावेशी विकास संभव है, बशर्ते प्रतिस्पर्द्धा संघर्ष न बने।

Inclusive development is possible, provided that competitions do not become a struggle.

* प्रकृति की अनदेखी विनाश का आमंत्रण - पत्र है *

"जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गात् अपि गरीयसी।
अपि स्वर्णमयी लंका, न मे लक्ष्मण रोचते।।"

उपर्युक्त कथन श्री राम द्वारा कहा गया है। जब लंका विजय के पश्चात लक्ष्मण द्वारा सोने की लंका का वैभव देकर वहीं रुकने का प्रस्ताव दिया

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

गया तो राम ने उनसे कहा माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। यह सोने की लंका मुझे बिल्कुल भी लुभावनी नहीं लगती है।

उस समय राम द्वारा यह कथन उनके प्रकृति प्रेम तथा सहृदयता को दर्शाता है क्योंकि उन्हे भौतिक सुखों से समृद्ध सोने की लंका की बजाये अपनी जन्मभूमि से ज्यादा लगाव था। बल्कि आज के आधुनिक भौतिकवादी युग में मनुष्य न केवल अपनी जन्मभूमि बल्कि सम्पूर्ण विश्व की प्रकृति पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

आधुनिक युग में प्रकृति तथा भूमि को माँ मानने की अवधारणा समाप्त हो चुकी है, जिसके चलते

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मनुष्य द्वारा उसका अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है और इसी वजह से प्रकृति में संतुलन की अवस्था भी अब नहीं रही है।

आधुनिक औद्योगिक क्रान्ति के युग में मनुष्य ने अपनी सभी सुख-सुविधाओं के साधनों के विकास के क्रम में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दोहन किया है। विकास की इस प्रक्रिया में खनिज पदार्थों का निष्कर्षण, हरे पेड़-पौधों को काटना, नदियों पर बाँध बनाना, उद्योगों द्वारा विनाशकारी गैसों तथा अपशिष्ट जल का निष्कर्षण आदि ऐसे कार्य किये गये हैं जिनका मानव

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

सभ्यता के क्रम में शायद पहली बार प्रकृति पर इतना नकारात्मक प्रभाव हुआ है। शायद इसीलिए कहा भी गया है कि,

"औद्योगिक विकास के लिए हरे जंगलों को जलाना उसी प्रकार है जैसे कि चाय बनाने के लिए किसी पुनर्जागरण कालीन पेंटिंग को जलाना।"

अर्थात दोनों प्रक्रियायें आर्थिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक दृष्टिकोण से अनुपयोगी तथा समाज के लिए हानिकारक हैं।

विज्ञान व तकनीकी की प्रगति ने प्रकृति की अनदेखी और उसके अतिशय दोहन को और बढ़ा दिया है। नयी-नयी तकनीकों के चलते मनुष्य बहुत आसानी से प्रकृति में मनवांछित

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

A3

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

परिवर्तन कर लेता है। ~~और~~ इस समय विभिन्न विचारधाराओं, जैसे कि मार्क्सवादी विचारधारा का यह मानना कि "प्रकृति केवल मनुष्य के विकास का साधन है", के प्रभाव के कारण भी यह प्रक्रिया तीव्र हुयी है।

प्रकृति की इसी अनदेखी के चलते आज संसार में विभिन्न प्रकार की घटनायें घटित हो रही हैं। जिसके चलते मानव ~~सभ्य~~ सभ्यता के ~~अस्ति~~ अस्तित्व पर संकट मंडराने लगा है। वस्तुतः आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या के चलते अतिशय तापमान वृद्धि की संभावना बनी हुयी है। जिसके परिणाम स्वरूप आर्कटिक क्षेत्र की वर्फ पिघलेगी, हिमालयी ग्लेशियर पिघल जायेंगे और इसी क्रम में महासागरों का

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

जलस्तर भी बढ़ेगा। जिसका परिणाम यह होगा कि तटीय इलाके डूब जायेंगे।

इसी प्रकार फसल उत्पादन पर भी नकारात्मक परिणाम पड़ेगा, खाद्यान्न सुरक्षा पर संकट मँडरायेगा। अभी भी विश्व की काफी जनसंख्या कुपोषित है और अगर जलवायु परिवर्तन इसी तरह जारी रहा तो फसलों में पोषक तत्वों की मात्रा भी कम होगी। फलतः कुपोषण जैसी समस्याओं का दायरा तथा तीव्रता बढ़ेगी।

इसी क्रम में महामारी का प्रसार, जैव विविधता पर संकट, मृदा प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण जैसे संकट भी विद्यमान हैं। अभी जल जैसी आधारभूत आवश्यकता की वस्तु जो कि कभी 2 प्रचुर मात्रा में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उपयोग के लिए उपलब्ध थी, आज बोतलों में मिल रहा है तो भूमिगत जल, महासागरीय जल का अधिकांश हिस्सा प्रदूषित हो चुका है। अभी हाल में स्वच्छ वायु की बोतलों की भी बिक्री शुरू हुयी है जो कि हमारी प्रकृति की बुरी हालत को स्पष्ट तरीके से बयान कर रही है। शायद हमें अबतक यह नहीं समझ आया है कि

प्रकृति हम से सम्बन्धित नहीं है, बल्कि हम प्रकृति से सम्बन्धित है।

ये सब परिणाम मनुष्य के ~~विनाश~~ विनाश की प्रक्रिया को प्रारम्भ करेंगे। क्योंकि किसी ने कहा है कि 'प्रकृति में एक बहुत अच्छी आदत है, वह अपना संतुलन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

बनाना जानती है। और शायद यही वजह है कि विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे- भूकंप, सुनामी, भू-स्खलन आदि के जरिये प्रकृति इसकी कोशिश करती रहती है। किन्तु नित्य दिन हमारे द्वारा किये जा रहे परिवर्तनों की सीमा बहुत ज्यादा हो जायेगी तो शायद एक भयंकर संतुलनकारी घटना घटित हो, जिसमें मानव सभ्यता का अस्तित्व ही मिट जाये। अतीत में विभिन्न सभ्यताओं के विनाश के सन्दर्भ में इसे समझा जा सकता है। इसीलिए कहा भी गया है कि,

"अति सर्वत्र वर्जयेत्।"

हालाँकि अब मनुष्यों

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

द्वारा थोड़े संरक्षणकारी कदम उठाने शुरू कर दिये हैं। जैसे कि जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र कार्यान्वियन समूह का निर्माण, पेरिस कन्वेंशन पर सहमति, जैव विविधता संरक्षण हेतु आईची लक्ष्य, नगोया प्रोटोकाल कार्टाजेना फ्रेमवर्क, ओजोन संरक्षण हेतु वियना समझौता व मोंट्रियल प्रोटोकाल आदि प्रयास किये जा रहें हैं।

इसी क्रम में नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों पर फोकस किया जा रहा है तथा हरित गृह, ग्रीन कॉरिडोर जैसी संकल्पनाओं का निर्माण भी किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में गांधी का कथन कि

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

"प्रकृति प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताएँ पूरी सकती है किन्तु लालच किसी एक का भी नही"

सही प्रतीत होता है। क्योंकि उपभोग आधारित अर्थव्यवस्था से विकास संधारणीय प्रकृति का नही होता है और न केवल समाज में असंतोष व असमानता व्याप्त हो जाती है बल्कि प्रकृति को भी नुकसान होता है।

इसी क्रम में विज्ञान व तकनीकि का इस्तेमाल भी सब प्रकृति संरक्षण में भरपूर किया जा रहा है। वैसे भी विज्ञान एक दोधारी तलवार है। जिसका इस्तेमाल उसको चलाने वाले की सोच पर निर्भर करता है। पहले मनुष्य ने विज्ञान से विनाश के हथियार जैसे परमाणु बम, वायरस

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

रासायनिक हथियार का निर्माण किया जो कि मानव विनाश का कारण बन सकते हैं और अब मनुष्य द्वारा विभिन्न पर्यावरण हितैषी तकनीकों के निर्माण पर बल दिया जा रहा है।

इस प्रकार यह कहना गलत नहीं होगा कि अगर अब भी हमने अपने आपको नहीं बदला तो शायद कुछ समय बाद हम बदलने के लिए रहे ही ना। प्रकृति का दोहन इतनी ही मात्रा में करना होगा, जितना कि आवश्यक है और साथ ही साथ प्रकृति संरक्षण पर भी ध्यान देना होगा। ताकि विकास एवं प्रकृति संरक्षण साथ-साथ चले और हमें

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

विकास की प्रक्रिया न केवल दीर्घ-कालीन समय तक बनी रहेगी बल्कि संधारणीय भी होगी।

मनुष्य को अपने लालच पर काबू पाना होगा अन्यथा प्रकृति में उसके द्वारा किये जा रहे हस्तक्षेप विनाशकारी परिणाम लायेंगे। ~~इसी सन्दर्भ~~ मानव जरूरतों की सीमितता के सन्दर्भ में भक्तिकालीन कवि कबीर ने सीक ही कहा है कि

"साईं इतना दीजिए, जामें कुटुम्ब समाए।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु भी भूखा न जाये॥"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति को संरक्षित करने का सबसे प्रभावी उपाय है।

To be prepared for war is the most effective means of preserving peace.

2. समस्याग्रस्त विश्व के लिये गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता।

The relevance of Gandhian Ideology in the problem laden world.

3. सामाजिक एवं क्षेत्रीय न्याय की कमज़ोरियाँ संपन्न समाजों के अंतर्विरोधों को प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में प्रस्तुत कर सकती हैं।

The weaknesses in social and regional justice can bring forward contradictions of affluent societies in form of direct struggle.

4. नैतिकता स्वयं अपना ही पुरस्कार है।

Morality is its own reward.

"समस्याग्रस्त विश्व के लिए गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता"

"गाँधी क्या ~~अंग्रेज़~~ ब्रिटिश शासन को केतली में पानी उबालकर पराजित करना चाहते हैं"

उपर्युक्त कथन एक ब्रिटिश नेता ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सन्दर्भ

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

मैं गाँधी जी द्वारा नमक के मुद्दे के चुनाव का उपहास उड़ाते हुए कहा था। किन्तु जब यही नमक का मुद्दा सम्पूर्ण भारत में राजनीतिक, सामाजिक एकता का सूत्र बन, राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र बिंदु बन गया तो अंग्रेजों को गाँधीवादी विचारधारा, कार्यविधि की असली ताकत का पता चला।

वस्तुतः यह गाँधीवादी विचारधारा का ही कमाल था कि अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन को इन्होंने बिना एक गोली चलाये पहले दक्षिण अफ्रीका तथा बाद में भारत में कड़ी टक्कर दी और भारत को आजाद करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आधुनिक विश्व में जहाँ हर तरफ हिंसा का बोलबाला है, आतंकवाद, नस्लभेद, घृणा अपराध जैसे घटनाक्रम हो रहें है। तो दूसरी तरफ प्रकृति के अतिशय दोहन से जलवायु परिवर्तन की समस्या का उद्भव है। इसी क्रम में भोग-विलास की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी के चलते मनुष्य का नैतिक पतन हुआ है। और उपभोगों की अधिकता के चलते ग्रामीण संस्कृति का सम्पूर्ण संरचनागत ढाचा ही बिखर गया है जिसका परिणाम मानसिक अवसाद, अशांति, ~~विभिन्न~~ जीवनशैली के अनियमित होने से विभिन्न बीमारियों का उद्भव हुआ है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

गाँधी जी द्वारा अपने समय में न केवल राष्ट्रीय आन्दोलन को चलाया बल्कि सामाजिक, आर्थिक, नैतिक तथा राजनीतिक स्तर पर समाज में सुधार लाने का भी प्रयास किया। वस्तुतः उनकी विचारधारा का मुख्य हिस्सा सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह की अवधारणा पर आधारित था।

उनका मानना था कि सत्य व्यक्ति को सामर्थ्य प्रदान करता है। अहिंसा के सन्दर्भ में भी वह मानसिक, शारीरिक हिंसा के विरोधी थे उनका यदि कायरता और हिंसा में किसी एक को चुनना हो तो वह हिंसा को चुनना श्रेष्ठ मानते थे।

इसी प्रकार गाँधी जी का

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

हिन्दू धर्मग्रंथो पर अटूट विश्वास था और इसी कारण वह वर्ण व्यवस्था में विश्वास रखते थे किन्तु उनका छुआ-छूत में विश्वास नहीं था बल्कि वह सभी कार्यों के मूल्य को समान मानते थे। उनका कहना था कि "एक नाई के कार्य का भी उतना ही महत्व है जितना कि एक वकील के कार्य का"

इसी प्रकार प्रकृति संरक्षण पर उनका मानना था कि हमें अपनी आवश्यकताओं को नियंत्रित रखना चाहिए तथा वह औद्योगीकरण की बजाये कुटीर उद्योगों के समर्थक थे। इसी क्रम में सर्वोदय की अवधारणा तथा राज्य का अहस्तक्षेप के सिद्धान्त में उनका विश्वास था।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आधुनिक समस्याग्रस्त विश्व के लिए गाँधीवादी विचारधारा कई मायनों में महत्वपूर्ण है, जैसे कि आज पूँजीवाद के चलते आय असमानता का स्तर बढ़ता जा रहा है तो इसके समाधान के लिए गाँधी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त को अपनाया जा सकता है। जिसमें उन्होंने उद्योगपति को अपनी अतिरिक्त आय को समाज सेवा में लगाने का निर्देश दिया है। इसी प्रकार समाज में श्रम के महत्व को रेखांकित करते हुए उनका यह कथन कि "बिना श्रम किये मुझे भोजन करने का भी अधिकार नहीं है" इसके द्वारा समाज में आत्मनिर्भरता तथा रोजगार बढ़ेंगे।

इसी क्रम में गाँधीवादी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

विचारधारा का प्रयोग 'राज्य की शक्तियों के नियंत्रण हेतु किया जा सकता है क्योंकि उनका मानना था कि राज्य शोषण का उपकरण होता है और इसकी शक्तियाँ न्यूनतम होनी चाहिए। इस सिद्धान्त के जरिए तानाशाही, औपनिवेशिक नियंत्रण जैसी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

इसी प्रकार आतंकवाद जैसी हिंसक समस्या से निपटने में उनका अहिंसा व सर्वोदय का सिद्धान्त काम आ सकता है। उनका मानना था कि "अगर आँख के बदले आँख लोगे तो एक दिन सम्पूर्ण विश्व अन्धा हो जायेगा" अर्थात हिंसा का जवाब हिंसा से देना उचित नहीं है। वस्तुतः हमें समस्या के 22 जड़ तक जाकर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उसका समाधान करना चाहिए तथा विरोधी पर विजय प्राप्त करने की बजाये उसके हृदय परिवर्तन पर बल दिया जाना चाहिए। भारत में नक्सलवाद की समस्या को नियंत्रित करने में सरकार द्वारा समर्पण ~~वाद~~ पुरस्कार की रणनीति तथा विकास कार्यों के द्वारा सामान्य जनता का हृदय परिवर्तन किया जा रहा है।

इसी प्रकार प्रकृति संरक्षण के मुद्दे पर गाँधी आज भी प्रासंगिक है। वस्तुतः उनका मानना था कि यदि मनुष्य की जरूरतें सीमित होंगी तो प्रकृति का अतिशय दोहन नहीं करना होगा। उनका कहना था कि "प्रकृति मनुष्य की जरूरतें पूरी कर सकती है, उसके

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

लालच को नहीं"

इसी प्रकार गाँधी जी वर्तमान विश्व में व्याप्त प्रतिस्पर्द्धी के क्रम में अनैतिकता को कम करने में प्रासंगिक है। वस्तुतः आज कल लोग सफलता के लिए दूसरों का शोषण, उनकी हत्या जैसे अनेक अनैतिक कार्य करते है। किन्तु गाँधी जी का मानना था कि यदि हमारा साधन ही पवित्र नहीं होगा तो इससे साधित हमारा कार्य कभी सफल नहीं होगा।

किन्तु गाँधीवादी विचारधारा कुछ मुद्दों पर उतनी प्रासंगिक नहीं है जैसे कि उनका अराजकता का सिद्धान्त जिसमें राज्य के हस्तक्षेप की मनाही है। अगर ऐसा हो गया तो

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

शोषित, पीड़ित, कमजोरों का हित खतरे में पड़ जायेगा।

इसी प्रकार इनका वर्ण विभाजन सम्बन्धी सिद्धान्त भी आज के समय में प्रासंगिक नहीं है तो नाई के कार्य का मूल्य यदि वकील के कार्य का मूल्य के बराबर होगा तो इससे कुशल तथा अकुशल श्रम की ~~[illegible]~~ विभिन्नता पर असर पड़ेगा जो समाज में असंतुलन पैदा करेगा।

इसी क्रम में इन्होंने धर्म और राजनीति को अभिन्न माना है उनका मानना था कि "धर्म विहीन राजनीति मृतदेह के समान है जिसे फेंक देना चाहिए।" इस सिद्धान्त से समाज में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिल सकता है तथा अल्पसंख्यकों

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

का शोषण बंद सकता है।
इसी प्रकार उनका उद्योगों के प्रति विरोध तथा कुटीर उद्योगों पर बल देना भी आज के समय में प्रासंगिक नहीं है। क्योंकि कुटीर व लघु उद्योग अपनी उत्पादन की सीमा के चलते विश्व की सारी जरूरतें पूरी नहीं कर पायेंगें।
उपर्युक्त विश्लेषण के पश्चात यह बात स्पष्ट है कि गांधी के जाने के बाद भी उनकी विचारधारा की प्रासंगिकता विद्यमान है ~~बल्कि~~ हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि धर्म व राज्य के मुद्दे पर वह अप्रासंगिक हुए है तो उनका धर्म "स्वकर्तव्य" था जिसे वे नैतिक मानते थे और नैतिकता (धर्म) युक्त राजनीति

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

समाज के लिए अच्छी ही होती है जबकि अराजकता के सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट कहा था कि यह व्यक्तियों द्वारा स्वयं किया जायेगा अर्थात जब व्यक्तियों की चेतना का स्तर इतना अधिक नैतिक हो जाये कि उन्हें राज्य की जरूरत ही न रहे तब राज्य की समाप्ति ही उचित है।

इस प्रकार गाँधीवादी विचारधारा कुछ आयामों में अपनी सीमितता के बावजूद भी आज समस्याग्रस्त विश्व के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। शायद इसीलिए कहा भी गया है कि, यदि हम प्रकृति का संपूर्ण संरक्षण चाहते हैं तो हमें अनिवार्यतः गांधीवादी विचारधारा को अपनाना होगा।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation